लड़ाई-झगड़ा

- **दोनों बिल्लियों के बीच झगड़े की जड़ क्या थी?**

उत्तर दोनों बिल्लियों के बीच झगड़े की जड़ थी—रोटी का एक टुकड़ा। दोनों का कहना था—रोटी मेरी है।

- **उनके झगड़े का हल कैसे निकाला गया?**

उत्तर उनका झगड़ा देखकर एक बंदर वहाँ आ गया। उसने रोटी को दो हिस्सों में तोड़कर एक तराजू के दोनों पलड़ों पर रख दिया। फिर उसने देखा एक पलड़ा नीचे हो गया और दूसरा ऊपर। पलड़ा बराबर करने के चक्कर में वह रोटी तोड़-तोड़कर खाने लगा। थोड़ी देर में ही वह पूरी रोटी खा गया। रोटी खत्म होते ही दोनों बिल्लियों के बीच का झगड़ा भी खत्म हो गया।

- **तुम किस-किस के साथ अक्सर झगड़ते हो?**

➢ झगड़ते समय तुम क्या-क्या करते हो?

➢ जब तुम किसी से झगड़ते हो तो तुम्हारा फ़ैसला कौन करवाता है?

उत्तर मैं अक्सर अपने भाई-बहनों से झगड़ता हूँ। झगड़ते समय मैं उनके बाल पकड़ लेता हूँ। उनकी चीजें फेंकने लगता हूँ। हमारे झगड़े का फैसला पिताजी करते हैं।

जूले

लेह में लोग एक-दूसरे से मिलने पर एक-दूसरे को ***जूले*** *कहते हैं।*

मिलने पर दोनों बिल्लियाँ एक-दूसरे को **नमस्ते** कहती हैं।

- तुम इन लोगों से मिलने पर क्या कहती हो?

➢ तुम्हारी सहेली/दोस्त
➢ तुम्हारे शिक्षक
➢ तुम्हारी दादी/नानी
➢ तुम्हारे बड़े भाई/बहन

उत्तर ➢ तुम्हारी सहेली/दोस्त — हाय, हैलो।
➢ तुम्हारे शिक्षक — नमस्ते, गुड मॉर्निंग, गुड आफ्टरनून।
➢ तुम्हारी दादी/नानी — प्रणाम, चरण-स्पर्श।
➢ तुम्हारे बड़े भाई/बहन — नमस्ते, गुड मॉर्निंग।

- **अब पता लगाओ कि तुम्हारे साथी कक्षा में कितने अलग-अलग तरीकों से नमस्ते कहते हैं?**

उत्तर स्वयं करो।

तुम्हें क्या लगता है

- **अगर बंदर बीच में नहीं आता तो तुम्हारी राय में रोटी किस बिल्ली को मिलनी चाहिए थी?**

उत्तर रोटी किसी भी हालत में किसी एक बिल्ली को नहीं मिलनी चाहिए थी। उस पर दोनों का बराबर हक था। अतः दोनों को आधी-आधी मिलनी चाहिए थी।

- **बंदर ने बिल्लियों से यह सवाल क्यों पूछा होगा कि उन्होंने रोटी**
  - ➢ एक आँख से देखी थी या दोनों आँखों से?
  - ➢ एक टाँग से झपटी थी या दोनों टाँगों से?

उत्तर ऐसे सवाल पूछने के पीछे उसकी यही मंशा रही होगी कि वह बिल्लियों को भरोसा दिला सके कि वह उनके साथ पूरा-पूरा न्याय करेगा।

बंदर-बाँट

- **कहानी का शीर्षक बंदर-बाँट क्यों है?**

उत्तर क्योंकि बंदर रोटी का बँटवारा करता है। बराबर बाँटने के चक्कर में वह पूरी रोटी खा जाता है। बिल्लियाँ देखती रह जाती हैं।

- **तुम, नाटक को क्या नाम देना चाहोगी?**

उत्तर दो के झगड़े में तीसरे को लाभ।

- **जो शीर्षक तुमने दिया, उसे सोचने का कारण बताओ।**

उत्तर बिल्लियाँ रोटी को लेकर झगड़ा करती हैं। दोनों पूरी रोटी अकेली खाना चाहती हैं। इसी बीच एक बंदर वहाँ आता है। वह कहता है–रोटी मुझे दे दो। मैं दोनों के बीच बराबर-बराबर बाँट दूंगा। बराबर बाँटने के चक्कर में वह पूरी रोटी खा जाता है। इस प्रकार दो के झगड़े में उसे लाभ हो जाता है।

माप-तोल

- बंदर ने रोटी बराबर बाँटने के लिए तराजू का इस्तेमाल किया। तराजू का इस्तेमाल चीज़ों को तोलने के लिए करते हैं। **नीचे दी गई चीज़ों में से किन चीज़ों को तोलकर खरीदा जाता है?**

उत्तर खरबूजा, तरबूजा, संतरा, चावल।

- तोलते वक्त एक पलड़े में तोली जाने वाली चीज़ रखी जाती है और दूसरे में तोलने के लिए बाट। **बाट किस धातु या चीज़ का बना होता है?**

उत्तर बाट लोहे या पीतल का बना होता है।

- बाट तोली जाने वाली चीज़ का वजन बताता है। वज़न किलोग्राम या ग्राम में बताया जाता है। **पता करो बाज़ार में कितने किलोग्राम या ग्राम के बट्टे मिलते हैं।** (फलवाले, सब्ज़ीवाले या परचून की दुकान से पता कर सकते हो।)

उत्तर 5 किलो 2 किलो 1 किलो 500 ग्राम 200 ग्राम 100 ग्राम 50 ग्राम

वाह! क्या खुशबू है!

बिल्लियों को रोटी की महक आ रही थी।

- **तुम्हें किन-किन चीज़ों के पकने की महक अच्छी लगती है?**

उत्तर राजमा, छोले, शाही पनीर, पकौड़े, हलवा, चाउमीन आदि।

- **और किन-किन चीज़ों की महक आती है जो खाने से जुड़ी नहीं हैं। जैसे—साबुन की सुगंध, जूते की पॉलिश की गंध आदि।**

उत्तर पेट्रोल की गंध, पाउडर की सुगंध, फेशवाश की सुगंध, सब्जी जलने की दुर्गंध।

आगे-पीछे

मुझे महक रोटी की आती।

इस वाक्य को इस तरह भी लिख सकते हैं—

मुझे रोटी की महक आती।

तुम भी इसीं तरह नीचे दिए वाक्यों के शब्दों को आगे-पीछे करके लिखो—

- **उसी खोज में मैं भी निकली।**

उत्तर मैं भी उसी खोज में निकली।

- **रखी मेज़ पर है वो रोटी।**

उत्तर वो रोटी मेज पर रखी है।

- **डरती थी उस तक जाने में।**

उत्तर उस तक जाने में डरती थी।

- **मैं ले जाने तुझे न दूँगी।**

उत्तर मैं तुझे नहीं ले जाने दूँगी।

- **जो पहले देखे हक उसका है रोटी पर।**

उत्तर जो पहले देखे उसका रोटी पर हक है।

एक और बँटवारा

अगले दिन दोनों बिल्लियों को एक तरबूज़ मिला। दोनों सोचने लगीं, इस तरबूज़ को कैसे बाँटा जाए कि तभी फिर से बंदर आ गया। आगे क्या हुआ होगा?

उत्तर उसने (बंदर ने) बिल्लियों से कहा "तरबूज़ मेरे पास लाओ। मैं बराबर-बराबर तुम दोनों में बाँट दूँगा।" बिल्लियों को बंदर की चालाकी के बारे में अच्छी तरह पता था। उन्होंने फ़ौरन कहा, नहीं, नहीं! हम अपने आप बाँट लेंगे। अब हमारी बुद्धि खोटी नहीं रही। हमारे अंदर समझदारी आ गयी है।" इतना सुनना था कि बंदर चुपचाप वहाँ से खिसक गया। बिल्लियाँ आपस में तरबूज बाँटकर खा लीं।